PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 9 | Issue - 10 | October - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Home Science

महिला सशक्तिकरण और नारी उत्थान

KEY WORDS:

डॉ० नम्रता (तिवारी) गृह विज्ञान विभाग

महिला सशक्तिकरण की बात उठते ही यह चिंतन आरंभ होता है कि क्या वास्तव में महिलाएँ कमजोर है, प्रकृति ने तो महिलाओं को शारीरिक रूप में पुरूषों की तुलना में ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता प्रदान कर सृष्टि को जन्म देने जैसा मजबूत कार्य सौप रखा है। संतान को जन्म देने एवं उनका लालन–पालन करने अपने अस्तित्व की रक्षा करने जैसे कुछ ज्यादातर मामलों में निर्णय पुरूष द्वारा लिए और प्रायः उन्हीं के द्वारा निर्धारित मापदंड अपनाए जाते हैं। उन्हें अवसरों से वंचित किया जाता रहा। महिलाएँ पिछड़ती गई। शोषण की प्रक्रिया निरंतन बढ़ती गई।

पुत्री या कन्या–रत्न में गृह–वैभव, पत्नी रूप में पुरूषार्थ सहयोगिनी (पत्युर्नो यज्ञ संयोगे–पाणिनी) और मातृरूप में सृष्टिकारिणी होते हुए विस्मथ का विषय है कि नारी को 'अबला की प्रस्थिति' ";जंजने वा मिमइसमद्ध प्राप्त है। उसकी एक संज्ञा 'अबला' है। अमरकोष के अनुसार :

'स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।1 अमरकोष की रचना महाभारत काल के पश्चात है। महाभारत के अनुसार 'गुरूणां चौव सर्वेषां माता हि परमो गुरूः (महाभारत, 1/211/16)2। स्वयं भगवान् श्री कृष्ण ने नारी में अपनी सात विभूतियों का सदर्प उल्लेख किया है :

'कीर्तिः श्रीवाक्य नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।3

इसके पूर्व वैदिक काल में नारी वर्ग को सामाजिक प्रतिष्ठा के पद भी प्राप्त होते थे। वैदिक काल में उनके अध्ययन पर रोक नहीं थी। महिला छात्राओं के दो वर्ग थे–ब्रह्मवादिनी तथा सद्योद्वाहा। इतिहास घोषा, लोपामुद्रा, शाश्वती, अपाला, विश्वारा आदि विदुषियों का एल्बम है। तथैव उपनिषद–काल की मैत्रेयी, गार्गी, अत्रेयी आदि प्रसिद्ध दार्शनिक है। मनुस्मृति उनकी स्वतंत्रता का पक्षधर न होते हुए भी उनके 'पूज्यत्व' के प्रति नतमस्तक है :

'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'4

भारतीय संस्कृति में पूजनीय, विधाध्यान की समानाधिकारिणी, विवाह के लिए स्वयंवरा कैसे इतना निर्बल हो गई–यह चिन्त्य है। स्वयंवरा और 'असूर्यम्पश्या' विरोधाभासी हैं, फिर भी यह सत्य है कि समय प्रवाह में नारी की दशा निर्बलता की ओर खिसकती गई, बर्बर आक्रामकों के दुराचार के सामने चिता की शरण लेने वाली पदि्मनियों की कतारें पराधीन होने लगी, पर्दा के पीछे चली गईं। दूसरे को बल देने वाली निर्धन बन गईं। मनुष्य के जीवन–मरू में सरसात बरसात हैं नारी। मनु की श्रद्धा कहती है :

जहाँ मरूज्वाला धधकती, चातकी कनको तरसती।
उन्हीं जीवन घटियों की, मैं सरस बरसात रे मन।।

प्राचीन काल से ही महिलाओं को आदि शक्ति, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा आदि नामों से सम्मानित तथा महिमामंडित किया जाता रहा है। महिलाओं को शक्ति तथा प्रेरणा का मुख्य श्रोत माना गया है और उनके बिना समाज व मनुष्य जाति को अस्तित्वहीन कहा गया है। कहा भी गया है – बिना घरनी घर भूत के बासा।

अर्थात, घरवाली या गृहिणी के बिना घर सूना–सूना, ऐश्वर्य विहीन, सुख–शांति से रिक्त भूतों का घर हो जाता है। नारी का शाब्दिक अर्थ होता है :

.
न – नहीं
अरि – शत्रु

अर्थात जो किसी का शत्रु नहीं है, वही नारी है। नारी के सुख, शांति, प्रगति, सफलता, कल्याण, करूणा, दया, क्षमा तथा असीम व अजय शक्ति–श्रोत कहा गया है। इस तथ्य से सभी अवगत हैं कि विश्व के प्रायः सभी महापुरूषों, महान तथा सफलतम लोगों की लक्ष्य प्राप्ति में नारी का निर्णायक योगदान रहा है। इस तथ्य को महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, बेर्ट्रंड रसेल, लेनिन, अब्राहम लिंकन आदि ने पूरजोर ढंग से उजागर किया है। भारत सनातन धर्म तथा वेद–पुराणों में सभी प्रमुख देवताओं को उनकी धर्म पत्नियों अर्द्धांगिनियों ने पूर्णता प्रदान की है। स्वयं शिव, जो कल्याण के प्रतीक हैं (शंकर विनाश के लिए जाने जाते हैं) उन्हें भी अर्द्धनारीश्वर–आधा पुरूष और आधा नारी के रूप में पूजित किया जाता है।

लेकिन इतनी श्रद्धा एवं इतने सम्मान के बावजूद मध्यकाल में इसे वस्तु के रूप में ज्यादा मान्यता दी गई और सहयोगी तथा देवी के रूप में कमा इसे सौंदर्य और वासना का प्रतीक मानकर समाज द्वारा उपेक्षित किए जाने लगा। पुरूष प्रधान समाज की संरचना में नारी को भोग्या तथा घर की चहार दिवारियों के बीच सीमित भूमिका के साथ कैद कर दिया गया। पुरूष के समानांतर चलने वाली नारी, प्रबंधन तथा शासन में अद्भत भूमिका निभाने वाली नारी पुरूष रूपी वट–वृक्ष के नीचे कभी न विकसित होने वाले पौधों की तरह बौना बनकर रह गयी। फलतः बाल–विवाह, सती–प्रथा, दहेज की विभीषिका आदि की धधकती ज्वाला में डाल दी जाने लगी।

महिला संगठन : महत्व एवं भूमिका

मनुष्य जाति के उद्भव काल से ही महिलाएँ निर्बल परावलंबी तथा पुरूष जाति की सहायक मानी जाती रही है। उन्हें अबला, कोमलांगी, निःशक्त तथा पुरूष रूपी वृक्ष के सहारे विकसित, पल्लवित तथा पुष्पित लता के रूप में चित्रित किया जाता है। संतों मनीषियों विद्वानों समाज शास्त्रियों तथा मानवता वादियों ने भी महिलाओं को मनुष्य जाति के अस्तित्व का मुख्य आधार स्तंभ माना है, लेकिन उन्हें पुरूषों के समकक्ष सैद्धांतिक रूप से घोषित करके भी व्यावहारिक रूप से उन्हें पुरूष–प्रधान समाज के मातहत रहने को विर्वश किया है। हमारे धर्मशास्त्रों तथा धर्मिक ग्रंथों ने भी नारी को लक्ष्मी अर्द्धांगिनी तथा मनुष्य जाति के जीवन तथा विकास का केन्द्र बिंदू माना है। इस विषयवस्तु पर कई ग्रंथ शोध–प्रबंध तथा सहस्त्र रचनाएँ सृजित की गई। परंतु, नारी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका और वह महत्व नहीं मिल सका जो उसकी वास्तविक हकदार थीं। यह जरूर कहा गया है और अवश्य बताया गया कि जो किसी का शस्त्रु नहीं है, वह नारी है न – नहीं, अरि – शत्रु

अर्थात जो सबका मित्र है, हितैषी है और सबके कल्याणरत है वह नारी है, वह स्त्री है और वही महिला है। दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, गौरी, सीता, राधा और न जाने कितने रूपों और नामों में नारी की स्तुति की गई है और उनकी अर्चना वंदना की जाती है। उन्हें देवी के नाम से संबोधित किया जाता है। पुरूषों, देवताओं के नाम के पहले उनका नाम जोड़कर उन्हें महिमामंडित किया जाता रहा है। जैसे लक्ष्मी–नारायण, गौरी –शंकर, सीता–राम तथा राधा–कृष्ण आदि। लेकिन नारी सैद्धांतिक रूप से तथा शाब्दिक रूप से सशक्त होकर भी वास्तिक धरातल पर शक्तिहीन, क्षमताविहीन तथा अबला के रूप में मानी जाती रहीं। पुरूषों ने इसी आधार पर महिलाओं के विषय में अपने विचार स्थापित किए। मनुष्यों ने अपनी कई संस्कृतियों एवं परम्पराओं में महिलाओं को सिर्फ भोग्या के ही रूप में चित्रित किया, उन्हें दीवारों तथा पर्दों की ओट में तथा घूँघट में रखकर सर्वथा सीमित कर दिए।

दूसरी तरफ समानता, स्वतंत्रता तथा वास्तविक सहभागिता के लिए तड़पती नारी चूल्हा–चौका, बच्चों की जननी, उनके पालन–पोषण तथा पति–परमेश्वर की परिधि से ऊपर उठकर लोक कल्याण, राष्ट्र–धर्म, शौर्य, कौशल एवं वीरांगना बनकर अपने जीवन के बहुद्देशीय स्वरूप को साकार करने हेतु छटपटाने लगीं। धीरे–धीरे उन्होंने चौखट से बाहर महावर लगे पाँव निकाले, स्कूल, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, चौपालों, पंचायतों, पुरूष– प्रधान समाज के दुर्ग में वीरांगना की भांति प्रवेश किया, वायुयानों के पायलट बनकर अनंत आकाश में उन्मुक्त विचरण करना आरंभ किया, जहाज की पतवार थामकर महासागरों का सीना रौंदना शुरू किया; अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्रों की कमान संभाल कर मानव–कल्याण तथा शस्त्रुओं के दमन हेतु पुरूषों को अमोद्य शक्तियाँ प्रदान की, चिकित्सा– विज्ञान की नित नई उपलब्धियाँ हासिल कर मनुष्य जाति को संजीवनी से लैस करने में अहम भूमिका निभाई और मातृभूमि की रक्षा, संसद, विधायिकाओं, पंचायतों, शासन–संचालन तथा अन्य कई रूपों में मनुष्य–जाति के कल्याणार्थ अद्भूत और कई साहसिक कार्यों से सम्पूर्ण विश्व को विस्मित करना शुरू कर दिया है नारियों ने।

महिलाओं ने जागृति एवं जागृति चेतना का संच करने हेतु कई स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महिला संगठनों ने काफी सक्रियता दिखाई है। उन्होंने महिलाओं के अधिकार तथा उनकी आर्थिक स्वतंत्रता व उनके स्वावलंबन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किए हैं। सरकारी स्तर पर मुख्य रूप से गठित तथा संचालित महिला सशक्तिकरण योजना को सभी स्तर पर काफी लोकप्रियता मिली। विश्वविद्यालय स्तर पर भीं वउमद म्उचवूमतउमदज ब्मसस का गठन कर नारी अधिकारों तथा सर्वांगीण विकास के कार्यक्रम चलाए जाने लगे हैं। भारत में सैकड़ों गैर सरकारी संगठनों ;छण्ळण्व्द्ध ने भी महिलाओं के अधिकार तथा उनकी स्वतंत्रता की दिशा में भरपूर कार्य किए हैं। वे आज भी इस मुहिम में जुटे हैं।

इनके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए "मसभ्मिसच ळतवनचे की स्थापना कर सरकारी अनुदान एवं संरक्षण में महिलाओं के छोटे–छोटे समूह में विभक्त कर सिलाई, कढ़ाई, टेलरिंग के अन्य तकनीकी जानकारियाँ तथा मोमबती, अगरबत्ती, लिफाफा, मैट, पंखे, मिट्टी की मूर्तियाँ, बर्तन अन्य हस्तकला तथा गृह–उद्योग के क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण दिए जाने लगा है और उन्हें सबसिडी के साथ आसान किश्तों में कर्ज मुहैया कराकर उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में मुख्य भूमिका निभाने के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार किया जाने लगा है।

इसके अलावा अन्य कई अंतराष्ट्रीय संस्थाएँ भी महिलाओं के उत्थान एवं राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फलक पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए उन्हें प्रेरित कर सक्रिय करने में जुटी हैं। इन अंतरर्राष्ट्रीय संस्थाओं में संयुक्त राष्ट्रसंघ की विभिन्न एजेंसियाँ, लायंस क्लब की महिला शाखा, लायनेश क्लब, रोटरी क्लब का महिला विंग, इनर–व्हिल, नारी जागरण मंच तथा विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दलों की महिला शाखाएं प्रमुख हैं। इन प्रयासों का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा है कि आज महिलाएँ सेना तथा सुरक्षा एजेंसियों, पुलिस गुप्तचर सेवा, वाणिज्य तथा बैंकिंग, सिविल सर्विसेज (प्रशासनिक सेवाओं), न्यायिक सेवाओं, पत्रकारिता, साइंस एवं टेक्नोलॉजी, अंतरिक्ष तथा समुद्र विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र, चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान, शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था पर्वतारोहण, मुद्रण एवं प्रकाशन, गृह–विज्ञान तथा गृह प्रबंधन व वाह्य प्रबंधन राजनीति एवं समान–सेवा तथा धर्म व अध्यात्म आदि क्षेत्रों में शीर्ष स्थान प्राप्त कर अपनी विजय–पताका लहरा रही है। जो पुरूष–वर्ग सदियों तक उन्हें भोग्या बनाकर घर–गृहस्थी की चहार दीवारियों तक सीमित कर उन्हें सिफ गुड़िया तथा शो–पीस बनाकर शो केश के योग्य वस्तु मान रहा था, उन्हें बुद्धि विवेक–शून्य समझकर सलाह लायक भी पसंद नहीं करता था और उनके मताधिकार का विरोधी था, आज वही नारी की असीम क्षमता, उनमें अनंत संभावनाएँ कुशाग्र बुद्धि का अग्रणी, प्रशासनिक क्षमता सम्पन्न, सर्वगुण शिरोमणि, विलक्षण प्रतिभा का धनी तथा अद्भुत नेतृत्व दक्षता का आफताब मानने लगा है। आज वह महिलाओं का ध्वज–धारक तथा अनुचर रहना और उनका सहभागी बनना सौभाग्य समझता है। बिहार में महिला मुखिया–पति कहलाना, महिला जिला–पार्षद पति के नाम से विभूषित होना तथा महिला विधायक या मंत्री–पति होना पुरूषों के लिए बड़ी उपलब्धि है। आज वही पुरूष नारी–सम्मान हेतु तोरण द्वार सजाकर महिलाओं की स्तुति करते नहीं थकता और दूसरी तरह सुबह से शाम तक कार्यालयों, खेतों, मैदानों, युद्ध–क्षेत्रों तथा अन्य महकमों को बखूबी संभालने वाली नारियाँ शाम को थकी–हारी घर की दहलीज पर कदम रखते हीं समस्त परेशानियाँ भूलकर अपनी घर–गृहस्थी संभाल लिया करती हैं, बच्चों की किलकारियों में मुद्रित हो जाया करती है, पति की मुस्कुराहटों में खोकर सम्पूर्ण घर को खुशियों

की सुगंध से सुवाषित कर देती हैं और सभी बड़ों–छोटों को सेवा–सत्कार तथा अपनत्व की अमित वर्षा से सराबोर कर दिया करती हैं।

बीसवीं सदी के सातवें–आठवें दशक में फ्राँस से प्रचंड वेग से उठा ग्अमश्े स्पइमतजल का तूफान जब कई देशों की घर–गृहस्थी को उजाड़ता संयुक्त राज्य अमेरिका पहुँचा तो सम्पूर्ण यूरोप नारी स्वातंत्र्य की आंधी में अपना सुख तथा अपनी शांति लगभग खो चुका था। महिलाओं ने एक विश्व संगठन बनाकर पुरूषों के अस्तित्व तथा पुरूष प्रधान समाज पर हमले कर उन्हें तार–तार कर दिया था। लेकिन जिस तेजी से यह आंधी चली, उसी गति से अमेरिका पहुँचते–पहुँचते खत्म भी हो गई। एक बार फिर नारी ने न+अरि का अपना अर्थ विश्व पटल पर दोहराया। उसने मातृत्व, करूणा, दया, क्षमा, शांति, सहयोग तथा सहिष्णुता को चरितार्थ करते हुए फिर अपने क्षतिग्रस्त घरों की ओर लौटीं और स्वेच्छा से स्वतः बच्चों की मासूम किलकारियों तथा पुरूषों की मुस्कुराहटों में निःस्वार्थ भाव से प्रवेश कर गई। फलतः सम्पूर्ण विश्व ने एक बार फिर जगद जननी नारी के अभिवादन में हाथ जोड़ लिए और कभी न झुकनेवाली शीष झुका दिए।

अतः आज के सामाजिक परिवेश में अनिवार्य है कि महिलाओं के प्रति सामाजिक मानसिकता में अपेक्षित बदलाव लाया जाये, महिला शिक्षा के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता दी जाये एवं आर्थिक रूप से उन्हें आत्म–निर्भर बनाया जाये, उनके लिए स्व–रोजगार की योजनाओं को बढ़ावा दिया जाये, उन्हें संगठित कर उनमें आत्म–चेतना को विकसित किया जाये, उन्हें अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति महिला–उत्पीड़न को रोकने के हर संभव प्रयास किए जाए। नारी–उत्थान से सामाजिक– समरसता बढ़ेगी और स्त्री–पुरूष सहयोग से समाज का उत्तरोतर विकास संभव हो सकेगा।

संदर्भ–सूची :

1. अमरकोष, 2/6/2
2. महाभारत, 1/211/16
3. श्रीमद्भगवद्गीता, 10/34
4. मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 56
5. भारत सरकार, जनगणना प्रतिवेदन, 2001
6- Dr. Krishnamoorthy (2006); Gender Disparity in India : Some Evidences; Conf. Volume, Indian Economic, Journal, 2006, p-860.
7- Ibid, p.-862.
8- UNDP, Human Development Report, 2005